arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:06 PM Page 168

पीपुल्स समाचार

स्मृति शेष
नानाजी देशमुख

93 साल का युवा...!

नानाजी देशमुख ने जब चित्रकूट की धरती पर अपनी कुटिया बनाई तो किसी को अंदाजा भी नहीं था कि क्या अलग होने जा रहा है। 1969 में दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना के बाद जब चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया तो वह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय था।

उनसे मिलने और चित्रकूट में उनका काम देखने के बाद महान वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि विकास का यह मॉडल देश के लिए सबसे उपयुक्त है। ग्रामीण भारत को यदि सुखी-संपन्न बनाना है तो नानाजी के इस मॉडल को पूरे देश में लागू करना चाहिए।

93 साल का युवा

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर बसे चित्रकूट के आसपास के करीब 80 गांवों के लोग आपसी विवाद को लेकर न्यायालय नहीं जाते। गांव की चौपाल पर बैठकर विवाद सुलझा लेते हैं। इस आश्चर्यजनक करिश्मे के पीछे केवल एक नाम याद आता है, नानाजी देशमुख। दैहिक रूप से वे अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वास्तविकता के धरातल पर वे शायद हमेशा मौजूद रहेंगे क्योंकि उन्होंने ग्रामीण भारत के विकास का एक मॉडल खुद तैयार किया, उस पर काम किया और परिवर्तन को परिणाम तक पहुंचाकर दिखाया। उनसे मिलने और चित्रकूट में उनका काम देखने के बाद महान वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि विकास का यह मॉडल देश के लिए सबसे उपयुक्त है। ग्रामीण भारत को यदि सुखी-संपन्न बनाना है तो नानाजी के इस मॉडल को पूरे देश में लागू करना चाहिए।

दरअसल नानाजी देशमुख ने जब चित्रकूट की धरती पर अपनी कुटिया बसाई तो किसी को अंदाजा भी नहीं था कि क्या अलग होने जा रहा है। 1969 में दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना के बाद जब चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया तो वह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय था। नानाजी इसके पहले कुलाधिपति बने। नानाजी ने काम प्रारंभ किया और परिणाम सामने आने लगे। वाटर हार्वेस्टिंग के क्षेत्र में तो उन्होंने ऐसा काम किया कि देश के किसी और हिस्से में ऐसा कोई उदाहरण नजर नहीं आता। 1999 में उन्हें राज्यसभा के लिए मनोनीत भी किया गया और पद्मविभूषण से नवाजा भी गया। लेकिन नानाजी ऐसे व्यक्तित्व के धनी हमेशा रहे, जिसकी मानसिक सेहत पर पद का कोई गुमान कभी हावी नहीं हुआ। इसका बड़ा कारण यह था कि नानाजी ने अपना जीवन देश को समर्पित कर दिया था। वे जीवन के अंतिम दिनों में भी सक्रिय थे। उन्होंने जब 80 की उम्र को पार किया था, तब डॉ. कलाम ने कहा था कि अस्सी पार के इस व्यक्ति की कर्मठता और समर्पण से देश की युवा पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

वास्तव में नानाजी का जीवन संघर्ष, संगठन और सफलता की कहानी है। महाराष्ट्र के परभनी जिले के गांव कडोली जिस परिवार में उनका जन्म हुआ था, उस परिवार के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपने बच्चे की पढ़ाई का खर्चा वहन कर सके। नानाजी जब स्कूल में थे, तभी उन्हें इस बात का एहसास हो गया था कि आगे बढ़ना है तो पढ़ना पड़ेगा और पढ़ना है तो इसके लिए धन जुटाना पड़ेगा। उन्होंने सब्जी के ठेले लगाए और उससे इतना पैसा कमा लेते थे कि पढ़ाई का खर्च पूरा हो जाए। विद्यार्थी जीवन में उन पर लोकमान्य तिलक का प्रभाव पड़ चुका था लेकिन ईश्वर ने तो उनके लिए कुछ और ही सोच रखा था। नानाजी के परिवार में केशव बलिराम हेडगेवार आते-जाते थे। उन्होंने नानाजी के भीतर की ऊर्जा को महसूस किया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। शाखा में जाना नानाजी को अच्छा लगा और वे इतने प्रभावित हुए कि हेडगेवार की मृत्यु के बाद नानाजी ने संघ को अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय ले लिया।

इस समर्पण के बाद नानाजी को सबसे पहले प्रचारक के रूप में उत्तर प्रदेश भेजा गया। आगरा में उनकी मुलाकात पंडित दीनदयाल उपाध्याय से हुई। उसके बाद वे गोरखपुर गए। उत्तर प्रदेश में संघ का बीजारोपण कठिन काम था। नानाजी के सामने सबसे बड़ी समस्या ठिकाना ढूंढने की थी। तब संघ के पास इतना पैसा भी नहीं हुआ करता था कि वह अपने प्रचारक के रोज के खर्च भी वहन कर सके। नानाजी तीन दिन से ज्यादा धर्मशाला में रह नहीं सकते थे क्योंकि धर्मशाला का यही नियम था। अंततः काफी कोशिशों के बाद बाबा राघवदास ने उन्हें अपनी कुटिया में इस शर्त पर रहने की इजाजत दी कि वे खाना बनाएंगे। नानाजी ने इसे स्वीकार कर लिया। वे दोनों समय खाना बनाते और बचे हुए समय में संघ के विचारों को फैलाते। केवल तीन साल की अवधि में नानाजी गोरखपुर और उसके आसपास 250 स्वयंसेवकों को तैयार कर लिया। इन्हीं स्वयंसेवकों की मदद से उन्होंने पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना गोरखपुर में की। आज देश में हजारों की संख्या में सरस्वती शिशु मंदिर हैं।

इसके पहले संघ ने जब राष्ट्रधर्म और पांचजन्य पत्रिका की स्थापना का निर्णय लिया तो अटल जी संपादक बनाए गए और मैनेजिंग डायरेक्टर का दायित्व नानाजी के हिस्से आया था। महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लग गया। इसके बावजूद छिपकर प्रकाशन जारी रहा और यह दिमाग नानाजी का ही था। प्रतिबंध हटने के बाद भारतीय जनसंघ का गठन हुआ और नानाजी को उत्तर प्रदेश की कमान सौंपी गई। 1957 तक उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में भारतीय जनसंघ ने अपने केन्द्र खोल लिए थे।

उत्तर प्रदेश में पहली बार गैरकांग्रेसी सरकार बनाने का श्रेय भी नानाजी को ही जाता है। वह सरकार थी चौधरी चरण सिंह की और सन् था 1967, वाकई में वे गजब के संगठनकर्ता थे। दरअसल जब जहां जरूरत पड़ी, तब नानाजी देशहित में आगे रहे। इमरजेंसी के खिलाफ जब जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया, तब नानाजी संपूर्ण सहयोग के साथ आगे आए। 1977 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर वे बलरामपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद भी चुने गए लेकिन राजनीति की मौजूदा धारा उन्हें पसंद नहीं थी। खासकर 1999 में राज्यसभा के लिए मनोनीत किए जाने के बाद उन्होंने राजनीति से मुंह मोड़ लिया और ग्रामीण विकास के अपने सपने को आकार देने में पूरा जोर लगा दिया। एक बात का जिक्र करना और जरूरी है कि नानाजी देशमुख ने विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में भी जबर्दस्त भूमिका निभाई।

नानाजी अब हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका काम हमारे बीच है। उनका सपना हमारे बीच है। उनकी दृष्टि हमारे बीच है। ग्रामीण भारत के विकास के सपने को साकार करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■